Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics D.I Sub Lecture. 16

# राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ

## Methods of Measuring the National Income

देश में राष्ट्रीय आय की धारणा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यतया एक वर्ष के अंदर उत्पन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं। देश में उत्पादन के विभिन्न साधनों के सहयोग से जो राष्ट्रीय आय का उत्पादन होता है उसे फिर से उन सभी साधनों के बीच वितरित कर दिया जाता है। राष्ट्रीय आय तथा देश के आर्थिक विकास में घनिष्ठ संबंध होता है। जिस देश की राष्ट्रीय आय अधिक होती है उसे विकसित देश कहा जाता है और जिस देश की राष्ट्रीय आय कम होती है उस देश को अर्द्धविकसित देश कहा जाता है। इस प्रकार किसी भी देश के आर्थिक विकास को उनकी राष्ट्रीय आय के आधार पर मापा जाता है इस प्रकार राष्ट्रीय आय को मापने की कई विधियाँ हैं जिनमें उत्पादन, आय, व्यवसाय, व्यय, इत्यादि को आधार मान कर राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है। राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ निम्न लिखित है।

1. उत्पादन दृष्टिकोण — राष्ट्रीय आय की माप में उत्पादन दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण स्थान है उत्पादन विधि के अन्तर्गत एक वर्ष के अन्दर देश में उत्पन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के शुद्ध मूल्य को राष्ट्रीय उत्पादन कहा जाता है। कुल उत्पादन में से कच्चे माल की कीमत, घीसावट व्यय इत्यादि को घटाने के बाद जो शेष रहता है उसे राष्ट्रीय आय कहते हैं। इस विधि को कुल उत्पादन रीति या मूल्य योग विधि भी कहते हैं। मूल्य योग विधि में अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं के वर्तमान मूल्य के आधार पर राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है। अंतिम निर्मित वस्तुओं के कुल मूल्य में से मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को दोहरी गणना की कठिनाई से बचाने के लिए घटा दिया जाता है राष्ट्रीय आय की माप के लिए इस विधि का प्रयोग प्रमुख रूप से किया जाता है।

2. आय दृष्टिकोण —— राष्ट्रीय आय की माप के लिए आय दृष्टिकोण विधि अत्यन्त महत्वपूर्ण विधि है। इसके अन्तर्गत एक वर्ष में देश के सभी व्यक्तियों तथा संस्थाओं की आय को जोड़ कर राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है। जिसमें सभी व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले भुगतान जैसे मजदूरी, वेतन, लगान, लाभ, ब्याज इत्यादि का योग करके राष्ट्रीय आय प्राप्त की जाती है। इस विधि में दोहरी गणना से बचना चाहिए उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति की आय 30 हजार वार्षिक है वह अपने आय में से अगर पाँच हजार रुपये अपने सेवक को दे ...

Scanned by CamScanner

तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति की आय की गणना के बाद सेवक के आय की राष्ट्रीय आय में नहीं होनी चाहिए। अगर ऐसी परिस्थिति आ जाती है तो दोहरी गणना से बचना चाहिए।

3. व्यवसाय दृष्टिकोण — राष्ट्रीय आय के गणना की माप व्यवसाय दृष्टिकोण से भी की जाती है। व्यवसाय दृष्टिकोण के अन्तर्गत देश के व्यवसाय में लगे हुए सभी व्यक्तियों की आयों की गणना के योग द्वारा राष्ट्रीय आय की माप की जाती है व्यवसाय दृष्टिकोण में देश भर में लगे सभी व्यवसायी जैसे कृषिकार्य, उद्योग, वाणिज्य-व्यापार, यातायात, सार्वजनिक सेवा आदि में लगे लोगों की गणना की जाती है इस तरह की गणना में उपहार, दान वृद्धावस्था, पेंसन को शामिल नहीं किया जाता है।

4. व्यय दृष्टिकोण — राष्ट्रीय आय की गणना में व्यय दृष्टिकोण का भी महत्वपूर्ण स्थान है व्यय दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है व्यय दृष्टिकोण में देश भर के सभी व्यक्तियों तथा संस्थाओं के व्यय, बचत, इत्यादि की गणना कर के कुल योग प्राप्त किया जाता है जिसे राष्ट्रीय आय कहा जाता है लेकिन इस विधि के द्वारा यह पता लगाना कठिन है। कि किस व्यक्ति की व्यय कितनी है या किसी संस्थान के व्यय, बचत की सही जानकारी प्राप्त नहीं हो जाती है जिससे व्यय विधि से आय की गणना करने में कठिनाई होती है।

5. उत्पादन तथा आय दृष्टिकोण का मिश्रण — उत्पादन तथा आय दृष्टिकोण विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है उत्पादन तथा आय दृष्टिकोण का मिश्रण के द्वारा आय की गणना हेतु प्रो० वी. के.आर.वी.राव ने मत व्यक्त किया है कि राष्ट्रीय आय की गणना के लिए उत्पादन तथा आय दृष्टिकोण का मिश्रण महत्वपूर्ण है उत्पादन और आय को मिश्रित या किया जाय उसके बाद उसकी माप किया जाय तो परिणाम सही निकलता है इससे राष्ट्रीय आय की गणना ज्ञात होता है दोनों के मिश्रित प्रयोग से राष्ट्रीय आय की गणना बेहतर होता है

6. सामाजिक लेखांकन दृष्टिकोण — राष्ट्रीय आय की गणना सामाजिक लेखांकन दृष्टिकोण से की जाती है यह भी एक महत्वपूर्ण विधि है सामाजिक लेखांकन विधि में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के आर्थिक लेखांकन को राष्ट्रीय आय लेखांकन कहा जाता है। इस विधि के विकास के साथ जिमोनटिएफ, रिचार्ड स्टोन तथा साइमन कुजनेट्स के नाम मुख्य रूप से जुड़े हुए हैं। सामाजिक लेखांकन विधि में व्यक्तिगत आर्थिक इकाईयों की आय तथा धन का योग सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की आय तथा धन का निर्माण करता है सामाजिक लेखांकन में कुल राष्ट्रीय उत्पाद, विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद, राष्ट्रीय आय

Scanned by CamScanner

वैयक्तिक आय तथा अन्य स्रोत वैयक्तिक आय को रखा जाता है।

इस प्रकार आय की गणना के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है जिसमें सभी विधियों में उत्पादन गणना पद्धति सबसे अच्छा एवं व्यवहारिक माना जाता है इस प्रकार उत्पादन गणना पद्धति सर्वोत्तम पद्धति मानी जाती है। राष्ट्रीय आय की मापने के इतनी विधियों के बावजूद, राष्ट्रीय आय की गणना में कठिनाइयाँ हैं राष्ट्रीय आय की गणना की अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जो निम्नलिखित है।

1. राष्ट्रीय आय की गणना की दोहरी गणना की संभावना — राष्ट्रीय आय की गणना के समय हमेशा दोहरी गणना की संभावना बनी रहती है इस समस्या का सामना राष्ट्रीय आय की गणना में दोबारा होने की संभावना बनी रहती है राष्ट्रीय आय की गणना में दोहरी गणना की संभावना की समस्या हमेशा बनी रहती है।

2. विश्वसनीय आंकड़ों का अभाव — राष्ट्रीय आय की गणना में सबसे महत्वपूर्ण कठिनाइयाँ विश्वसनीय आंकड़ों का अभाव की समस्या बनी रहती है खासकर भारत जैसे देश में इसकी नितांत कमी रहती है।

3. बहुत सी वस्तुएँ तथा सेवाएँ जिनका मुद्रा के द्वारा लेन-देन नहीं होता इनकी गणना राष्ट्रीय आय में नहीं होती है। क्योंकि राष्ट्रीय आय की गणना द्रव्य में की जाती है। घर की महिलाओं की सेवा स्वयं उत्पादित वस्तुओं का घर में उपयोग ऐसे उदाहरण है जिनकी गणना राष्ट्रीय आय में नहीं हो पाती है इस कारण राष्ट्रीय आय की गणना सही नहीं हो पाती है।

4. राष्ट्रीय आय की गणना तथा तुलना में मूल्य परिवर्तन के कारण भी कठिनाई होती है मूल्य परिवर्तनों की समायोजन करते हुए सही मूल्य निर्देशांक का प्रयोग करना पड़ेगा। लेकिन मूल्य निर्देशांक के निर्माण में अनेक कठिनाइयाँ होती है जो पूर्णतः सही नहीं होते हैं।

5. अल्पविकसित देशों में राष्ट्रीय आय की सही गणना नहीं हो पाती क्योंकि अर्थव्यवस्था के एक बड़े भाग में वस्तु अदल-बदल का प्रचलन होता है, तथा वह अव्यवस्थित होती है जिससे राष्ट्रीय आय की गणना में कठिनाई होती

6. सरकार के व्यय तथा करों के कारण भी कठिनाई होती है साथ ही विभिन्न देशों में इससे संबंधित नीतियों में अंतर भी होता है

इस प्रकार राष्ट्रीय आय की गणना में बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है प्रत्येक व्यवहारिक कठिनाईयों को दूर करके राष्ट्रीय आय की गणना में सुधार किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner